विसर्ग - संधि : भाग - 2

[शास्त्री द्वितीय वर्ष]

→ विसर्ग संधि के प्रमुख नियम :

2. विसर्ग का 'र्' हो जाता है -

यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'आ' को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में 'आ', 'उ' 'ऊ' या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है।

जैसे -

निः + आशा	=	निराशा
निः + धन	=	निर्धन
निः + बल	=	निर्बल
निः + जन	=	निर्जन
आशीः + वाद	=	आशीर्वाद
दुः + बल	=	दुर्बल
दुः + जन	=	दुर्जन
निः + धारण	=	निर्धारण
दुः + उपयोग	=	दुरुपयोग
दुः + ऊह	=	दुरूह
बहिः + मुख	=	बहिर्मुख

→ 3. विसर्ग का 'श्' हो जाता है - यदि

Scanned with CamScanner

विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च', 'छ' या 'श' हो तो विसर्ग का 'श' हो जाता है।

जैसे— निः + चिंत = निश्चिंत
निः + छल = निश्छल
दुः + शासन = दुश्शासन
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

4- विसर्ग का 'ष' हो जाता है- विसर्ग के पहले 'इ', 'उ' और बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ष' हो जाता है।

जैसे—

निः + कपट = निष्कपट
निः + कंटक = निष्कंटक
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
निः + ठुर = निष्ठुर
निः + प्राण = निष्प्राण

भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी
आनंद बिहारी संस्कृत महाविद्यालय,
रहीमपुर, खगड़िया।

Scanned with CamScanner